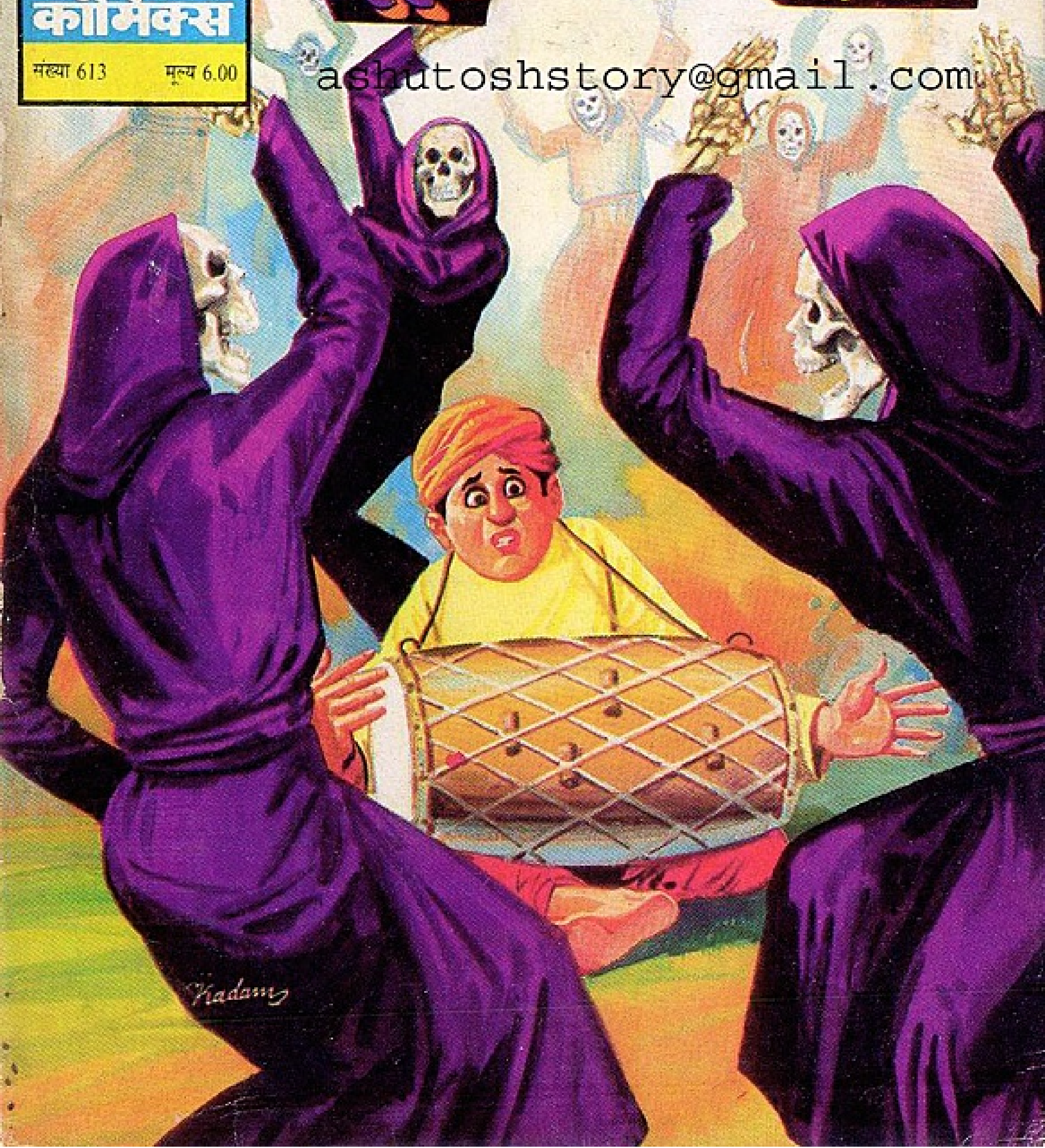
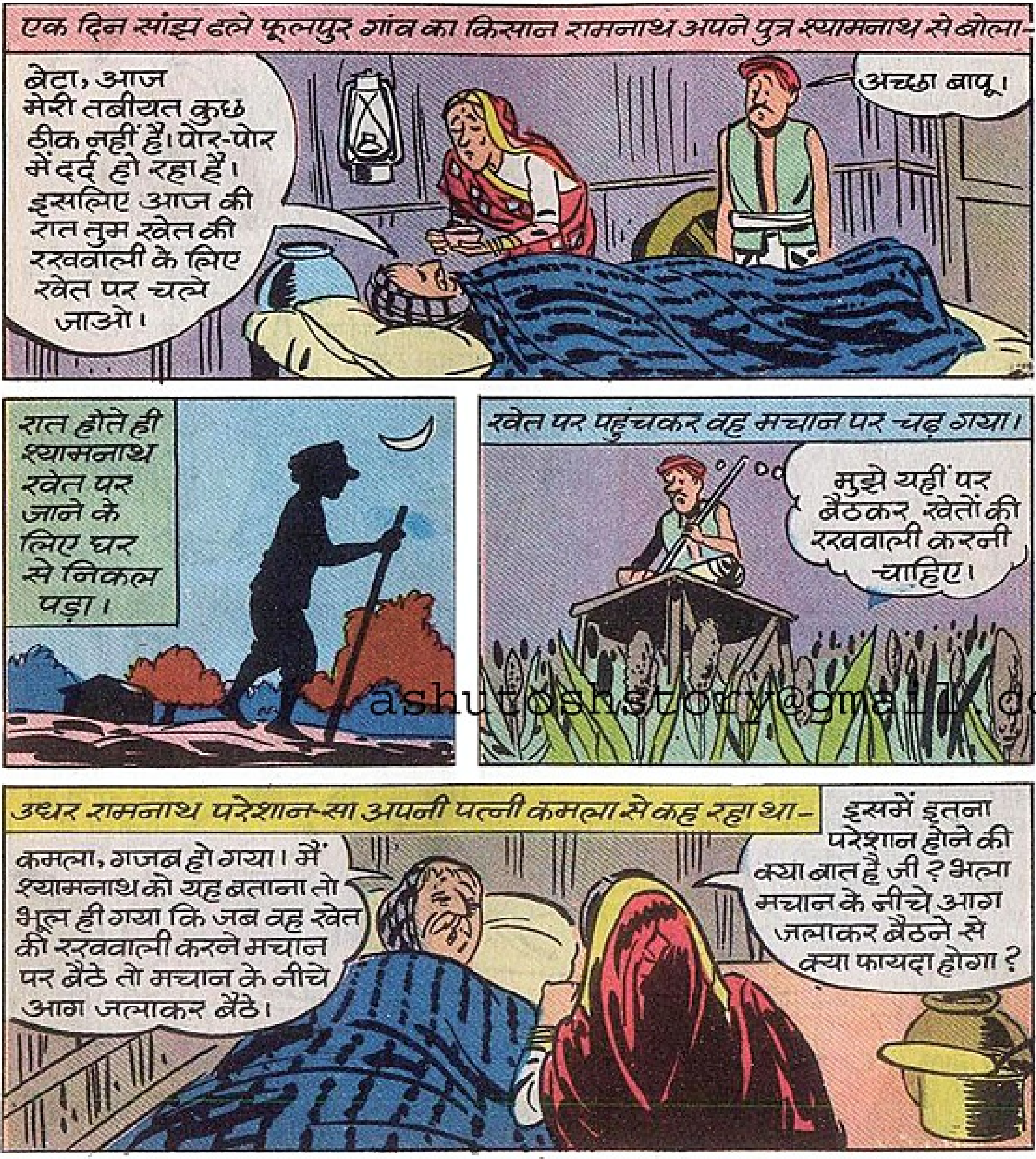
मनोज
कॉमिक्स
संख्या 613 मूल्य 6.00

भूत का ढोल



भूत का ढोल

लेखक: विजय कुमार वत्स ♦ चित्रांकन: वसन्त ब. हल्बे

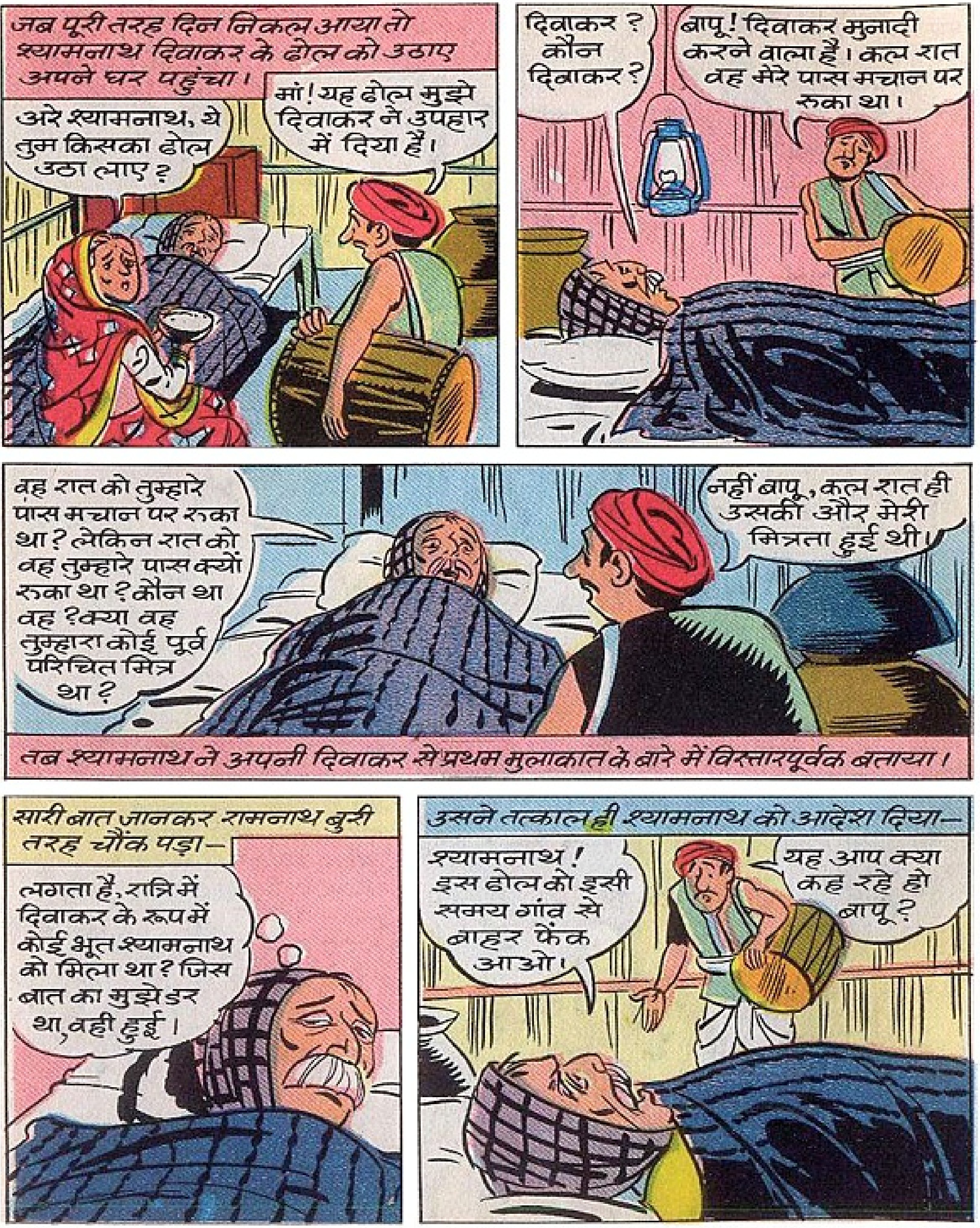



कमला, तू नहीं जानती है। रात के अंधेरे में भूत-पिशाच ऊधम मचाने के लिए प्रकट होते हैं। और भूत-पिशाच अग्नि के समीप भूलकर भी नहीं आते हैं। इसलिए मैं जब भी रात को खेत की रखवाली करता हूं...
...तो वहां आग जलाकर रखता हूं। सुना है रोज आधी रात के बाद भूत उत्पात मचाने के लिए प्रकट होते हैं।
ओह! यदि ऐसी बात है तो सचमुच ही गजब हो गया है...
...श्यामनाथ खेत पर अकेला है। रात को अगर उससे भूत टकरा गए तो...?
कहते-कहते कमला के मुख पर भय की लहर दौड़ गई थी।
मैं अभी खेत पर जाकर श्यामनाथ से कह आती हूं कि वह अपने आस-पास आग जलाकर रखे।
कमला! क्या तू बावली हो गई है? इतनी रात गए तू खेत पर जाएगी...
...नहीं-नहीं, मैं इस समय तुझे खेत पर हरगिज नहीं जाने दूंगा। बस, अब तो यहीं बैठकर भगवान से दुआ करो कि आज की रात श्यामनाथ की मुठभेड़ भूतों से न हो।
अब इसके सिवाय और कोई चारा भी तो नहीं है जी।


इधर मचान पर बैठा श्यामनाथ जंगली जानवरों को अपने खेल से भगा रहा था—
हुर्र...र...हो...!
तभी—
ढम...ढम.. ढम....
रात के इस पहर में ढोल बजने की यह आवाज कहां से आ रही है?
उसने चारों ओर अपनी दृष्टि दौड़ाई।
ओह! कौन है ये? यह इस प्रकार ढोल बजाता हुआ क्यों आ रहा है?
जैसे ही ढोल वाला ढोल बजाता हुआ मचान के पास पहुंचा—
ढम.. ढम.. ढम...
ऐ ढोलवाले, कौन हो तुम? इतनी रात गए ढोल बजाते हुए कहां जा रहे हो?


ढोलवाले ने तुरंत ही ढोल बजाना बंद करके श्यामनाथ की ओर मुस्कराकर देखते हुए कहा—
मैं दिवाकर ढोलवाला हूं। ढोल बजाकर गांव-गांव मुनादी करके रोजी-रोटी कमाना मेरा धंधा है। मैं पास के गांव में मुनादी करके लौट रहा हूं...
...अकेला हूं इसलिए जहां दो रोटी मिल जाती हैं वहीं बसेरा डाल देता हूं। इस समय चांदनी रात है। वातावरण एकदम शांत है सो ढोल बजाने का मन हुआ। इसलिए ही मैं इस समय ढोल बजाता आ रहा था कि तुमने टोक दिया।
दिवाकर ढोलवाले! रात के इस समय सफर करना खतरे से खाली नहीं है...
...न जाने राह में कहां डाकू-लुटेरे मिल जाएं। मेरी मानो तो आज की रात तुम मेरे पास रुक जाओ। सुबह होते ही यहां से चले जाना।
कह तो तुम ठीक रहे हो भाई। मैं आज की रात यहीं रुक जाता हूं।
कुछ देर बाद ही दिवाकर ढोलवाला मचान पर श्यामनाथ के सामने बैठा था।
दिवाकर भाई! तुम्हारा ढोल तो बहुत सुन्दर है। इतना सुन्दर ढोल तो मैंने आज तक नहीं देखा।
जवाब में दिवाकर ने कुछ भी नहीं कहा। केवल मुस्कराकर रह गया।
सारी रात उन दोनों ने बात करते-करते गुजारी। पौ फटने ही वाली थी।
श्यामनाथ भाई! सुबह होने में कुछ ही देर बाकी है, इसलिए अब मैं यहां से चलना चाहूंगा।
अच्छा दिवाकर भाई।


श्यामनाथ भाई! तुम्हें मेरा ढोल बहुत पसंद आया था न?
हां दिवाकर भाई, तुम्हारा ढोल वास्तव में ही बहुत सुन्दर है।
तो मैं यह ढोल तुम्हें उपहार में देता हूं।
लेकिन यह कैसे हो सकता है? इस ढोल के द्वारा तुम अपनी रोजी-रोटी कमाते हो। इसके बिना तो तुम बेरोजगार हो जाओगे।
तुम इसकी फिक्र न करो दोस्त! मैं और नया ढोल खरीद लूंगा। इस ढोल को तुम दोस्ती का उपहार समझकर स्वीकार कर लोगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।
ओह! यदि ऐसी बात है तो मैं यह ढोल लिए लेता हूं।
दिवाकर श्यामनाथ को ढोल देकर खाली हाथ वहां से चल दिया।
बड़े ही विचित्र स्वभाव का था दिवाकर। मैंने ढोल की प्रशंसा क्या कर दी, वह तो सचमुच ही मुझे अपना ढोल दे गया।



जब पूरी तरह दिन निकल आया तो श्यामनाथ दिवाकर के ढोल को उठाए अपने घर पहुंचा।
अरे श्यामनाथ, ये तुम किसका ढोल उठा लाए?
मां! यह ढोल मुझे दिवाकर ने उपहार में दिया है।
दिवाकर? कौन दिवाकर?
बापू! दिवाकर मुनादी करने वाला है। कल रात वह मेरे पास मचान पर रुका था।
वह रात को तुम्हारे पास मचान पर रुका था? लेकिन रात को वह तुम्हारे पास क्यों रुका था? कौन था वह? क्या वह तुम्हारा कोई पूर्व परिचित मित्र था?
नहीं बापू, कल रात ही उसकी और मेरी मित्रता हुई थी।
तब श्यामनाथ ने अपनी दिवाकर से प्रथम मुलाकात के बारे में विस्तारपूर्वक बताया।
सारी बात जानकर रामनाथ बुरी तरह चौंक पड़ा—
लगता है, रात्रि में दिवाकर के रूप में कोई भूत श्यामनाथ को मिला था? जिस बात का मुझे डर था, वही हुई।
उसने तत्काल ही श्यामनाथ को आदेश दिया—
श्यामनाथ! इस ढोल को इसी समय गांव से बाहर फेंक आओ।
यह आप क्या कह रहे हो बापू?


श्यामनाथ, मैं जो कह रहा हूं, उसका पालन करो। जानते हो जो ढोल तुम उठाए खड़े हो वह ढोल किसी मनुष्य का न होकर किसी भूत-प्रेत का है।
क्या ?
मैं ठीक कह रहा हूं बेटा। जरा दिमाग पर जोर देकर सोचो, आधी रात के समय दिवाकर कहां से मुनादी करके आ रहा था? और वह बेवजह तुम्हें इतना सुन्दर ढोल क्यों दे गया? फिर पूरी तरह दिन निकलने से पहले ही वह तुम्हारे पास से चला क्यों गया?
सुनकर श्यामनाथ सोच में पड़ गया।
बेटा! भूत-प्रेत दिन में अदृश्य हो जाते हैं। और रात को ही प्रकट होते हैं। जैसे ही दिन निकलने को हुआ दिवाकर नाम का भूत तुम्हारे पास से चला गया। क्या ये बातें सिद्ध नहीं करतीं कि कल रात तुम्हारी मुलाकात एक भूत से हुई थी?
बापू! शायद आप ठीक ही कह रहे हैं। अब सोचने पर...
...मुझे दिवाकर का कल रात का व्यवहार विचित्र-सा लग रहा है। वह जरूर कोई भूत था।
बेटा, यह ढोल एक भूत का है। क्या पता यह क्या गुल खिलाए? अतः इससे पहले कि यह ढोल कोई गुल खिलाए, तुम इस ढोल को गांव से बाहर फेंक आओ।
श्यामनाथ उसी समय ढोल को लेकर गांव के बाहर की ओर चल दिया।


गांव के बाहर पहुंचकर—
चलो, बला से पीछा छूटा।
ढोल को फेंककर वह वापस लौट पड़ा।
जैसे ही वह अपनी झोंपड़ी के बाहर पहुंचा—
श्यामनाथ! ढोल तो तुम्हारे पीछे-पीछे लुढ़कता इधर ही आ रहा है।
रामनाथ का कथन सुनकर श्यामनाथ ने चौंककर पीछे मुड़कर देखा—
अरे!
तभी लुढ़कता हुआ ढोल उसके पैरों के पास आकर रुका और उसमें से आवाज आई—
श्यामनाथ! तुम मुझसे पीछा छुड़ाना चाहते थे। लेकिन मैं तुम्हारा पीछा आसानी से नहीं छोड़ने वाला हूं। तुम्हारे पिता ने सही पहचाना। मैं भूत का ढोल हूं। मुझे एक भूत ने तुम्हें उपहार में दिया है। अब तो मैं तुम्हारे गले पड़कर ही रहूंगा...
...तुम्हें प्रतिदिन मुझे दो घंटे बजाना पड़ेगा। कान खोलकर सुन लो, जिस दिन भी तुमने मुझे नहीं बजाया, उसी दिन मैं तुम्हारे प्राण ले लूंगा। और यदि तुमने पुन: मुझे अपने से दूर फेंकने की चेष्टा की तो तुम पागल हो जाओगे।
ओह!
ढोल की बात सुनकर श्यामनाथ हतप्रभ रह गया।

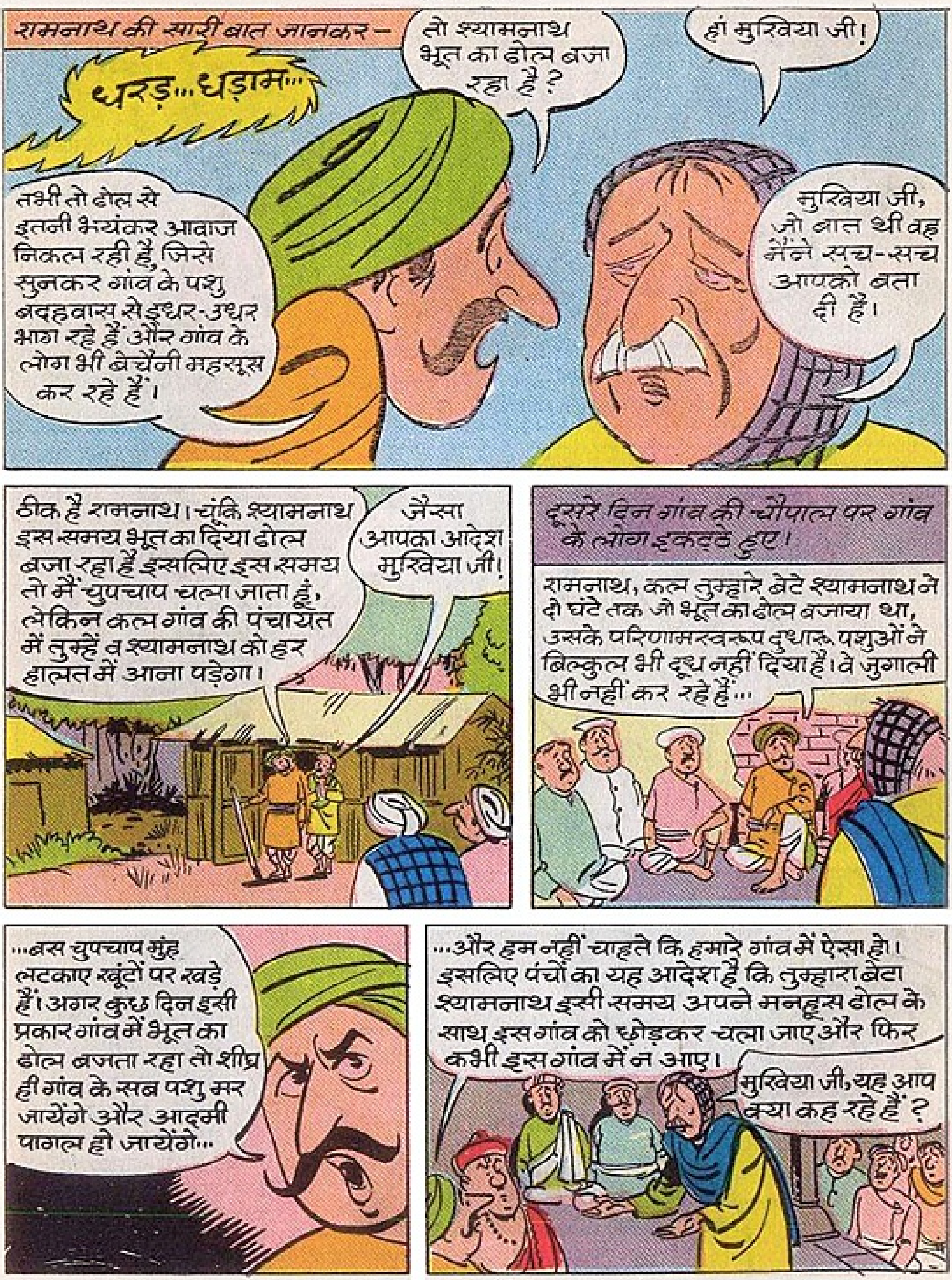


श्यामनाथ! पागलों की तरह मुंह फाड़े मुझे इस प्रकार क्या देख रहे हो? मुझे उठाकर अपनी झोंपड़ी में ले चलो।
श्यामनाथ ने कोई चारा न देखकर ढोल को उठाया और मुंह लटकाए झोंपड़ी में आ गया। झोंपड़ी में रामनाथ व कमला भी हक्के-बक्के से खड़े थे।
यह कैसी आफत गले पड़ी?
श्यामनाथ! अब तुम मुझे दो घंटे तक बजाओ।
श्यामनाथ ढोल का आदेश सुनकर चुपचाप खड़ा रहा। उसने ढोल को बजाने की कोई चेष्टा नहीं की।
श्यामनाथ! मुझे बजाने में देरी न करो वरना मैं इसी समय तुम्हारे प्राण ले लूंगा।
श्यामनाथ ढोल की यह धमकी सुनकर भी किंकर्तव्यविमूढ़-सा खड़ा रहा।
तब रामनाथ ने आगे बढ़कर उसे झंझोड़ते हुए कहा—
बेटा! ढोल बजाने में देरी क्यों कर रहे हो? जल्दी से इसे बजाओ वरना यह ढोल तुम्हारी जान ले लेगा।
श्यामनाथ की तंद्रा टूटी...
...और अगले ही पल वह ढोल को पूरी शक्ति से बजा रहा था।
धरड़..धड़ाम..
धरड़..धड़ाम..
यह क्या? कल रात जब दिवाकर प्रेत इस ढोल को बजा रहा था तो बड़ी सुरीली आवाज निकल रही थी। आज मेरे बजाने पर इस ढोल से इतनी भयंकर आवाज क्यों उत्पन्न हो रही है?

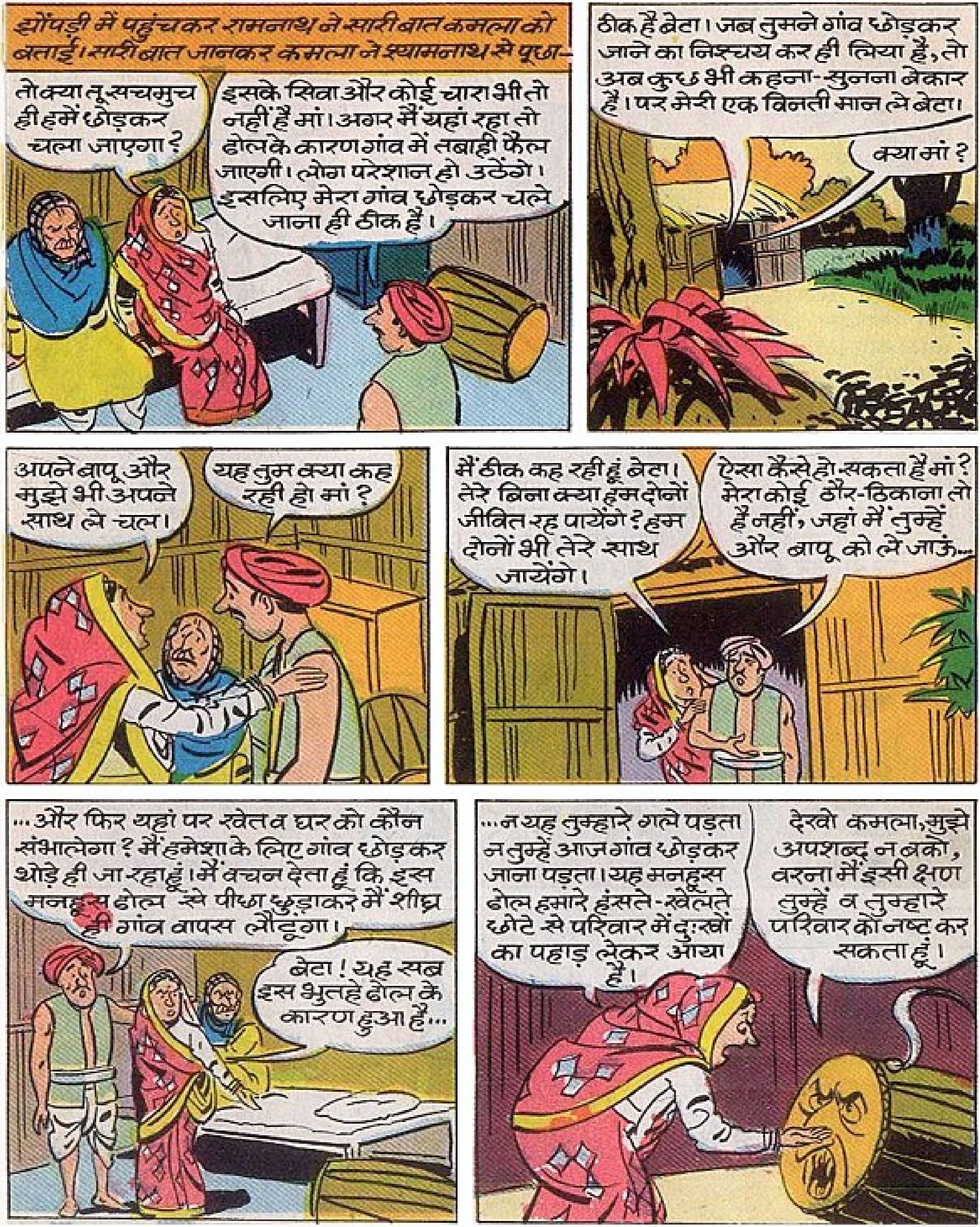


श्यामनाथ के ढोल की आवाज पूरे गांव में गूंजने लगी–
धरड़... धड़ाम...
अरे! यह भयंकर गर्जना कैसी है?
इस गर्जना को सुनकर ढोर बेचैनी से इधर-उधर भाग रहे हैं।
हमें पता लगाना चाहिए कि यह गर्जना कहां हो रही है?
गांववाले मिलकर उस दिशा की ओर चल पड़े जिधर से ढोल की आवाज आ रही थी।
कुछ देर बाद ही सारा गांव रामनाथ की झोंपड़ी के बाहर जमा था।
धरड़..धड़ाम.. धरड़..धड़ाम..
यह भयंकर आवाज रामनाथ के घर से ही आ रही है।
गांव का मुखिया गांववालों से बोला–
तुम सब यहीं रुको, मैं झोंपड़ी में जाकर देखता हूं कि क्या माजरा है?
धरड़..धड़ाम धरड़..धड़ाम
जैसे ही मुखिया झोंपड़ी में घुसा–
धरड़... धड़ाम..
ओह! यह भयानक आवाज तो श्यामनाथ के ढोल में से आ रही है। लेकिन श्यामनाथ इतना तन्मय होकर ढोल क्यों बजा रहा है? मुझे आगे बढ़कर श्यामनाथ को ढोल बजाने से रोकना चाहिए।


वह अन्दर जाकर जोर से चिल्लाया—
श्यामनाथ! बहुत हो चुका, अब अपने ढोल की यह मनहूस आवाज बंद करो।
धरड़... धड़ाम..
मुखिया के कथन का श्यामलाल पर कुछ भी प्रभाव न हुआ। वह पहले की ही तरह ढोल बजाता रहा।
धरड़... धड़ाम...
श्यामनाथ! क्या तू बहरा हो गया है? तूने सुना नहीं? मैंने तुझसे ढोल न बजाने को कहा है।
श्यामनाथ अब भी पहले की तरह ढोल बजाता रहा।
एकाएक रामनाथ हाथ जोड़ता हुआ विनयपूर्वक मुखिया से बोला—
धरड़.. धड़ाम...
मुखिया जी! श्यामनाथ को ढोल बजाने से न रोको, यह पूरे दो घंटे तक ढोल को बजाएगा। तब तक यह किसी भी हालत में ढोल बजाना बंद नहीं करेगा...
धरड़... धड़ाम...
...यदी दो घंटे से पहले इसने ढोल बजाना बंद किया तो यह तत्काल ही मर जाएगा। मुखिया जी, इसे ढोल बजाने दो, वरना मैं इससे हाथ धो बैठूंगा।
रामनाथ, मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है, आखिर तुम कह क्या रहे हो? श्यामनाथ दो घंटे तक लगातार इस ढोल को क्यों बजाएगा? कृपया मुझे विस्तार से सारी बात बताओ।
तब दुखी रामनाथ ने मुखिया को सारी बात बताई।


रामनाथ की सारी बात जानकर –
धरड़...धड़ाम...
तो श्यामनाथ भूत का ढोल बजा रहा है ?
हां मुखिया जी!
तभी तो ढोल से इतनी भयंकर आवाज निकल रही है, जिसे सुनकर गांव के पशु बदहवास से इधर-उधर भाग रहे हैं और गांव के लोग भी बेचैनी महसूस कर रहे हैं।
मुखिया जी, जो बात थी वह मैंने सच-सच आपको बता दी है।
ठीक है रामनाथ। चूंकि श्यामनाथ इस समय भूत का दिया ढोल बजा रहा है इसलिए इस समय तो मैं चुपचाप चला जाता हूं, लेकिन कल गांव की पंचायत में तुम्हें व श्यामनाथ को हर हालत में आना पड़ेगा।
जैसा आपका आदेश मुखिया जी!
दूसरे दिन गांव की चौपाल पर गांव के लोग इकट्ठे हुए।
रामनाथ, कल तुम्हारे बेटे श्यामनाथ ने दो घंटे तक जो भूत का ढोल बजाया था, उसके परिणामस्वरूप दुधारू पशुओं ने बिल्कुल भी दूध नहीं दिया है। वे जुगाली भी नहीं कर रहे हैं...
...बस चुपचाप मुंह लटकाए खूंटों पर खड़े हैं। अगर कुछ दिन इसी प्रकार गांव में भूत का ढोल बजता रहा तो शीघ्र ही गांव के सब पशु मर जायेंगे और आदमी पागल हो जायेंगे...
...और हम नहीं चाहते कि हमारे गांव में ऐसा हो। इसलिए पंचों का यह आदेश है कि तुम्हारा बेटा श्यामनाथ इसी समय अपने मनहूस ढोल के साथ इस गांव को छोड़कर चला जाए और फिर कभी इस गांव में न आए।
मुखिया जी, यह आप क्या कह रहे हैं ?


मैं ठीक कह रहा हूं रामनाथ। जनहित के लिए तुम्हें और तुम्हारे बेटे को पंचों का यह फैसला मानना ही होगा।
मुखिया जी! मुझ गरीब पर इतना अन्याय न करो। जरा सोचो, गांव छोड़कर श्यामनाथ कहां जायेगा? इसे गांव में ही रहने दीजिए मुखिया जी।
ठीक है। हम तुम्हारी बात मान लेते हैं। श्यामनाथ को गांव छोड़कर कहीं नहीं जाना पड़ेगा, पर इसके लिए श्यामनाथ को पंचायत की एक बात माननी होगी।
कौन-सी बात मुखिया जी?
श्यामनाथ के पास जो भूत का ढोल है, इसे उस ढोल को फेंकना होगा। वह ढोल ही सारे झगड़े की जड़ है।
मुखिया जी! आपको मैंने सारी बात बता दी है, फिर भी आप ऐसा कह रहे हैं...
...श्यामनाथ जिस क्षण भी ढोल को अपने से दूर करने की कोशिश करेगा, वह उसी क्षण पागल हो जाएगा।
तब तो एक ही उपाय है रामनाथ। अपने बेटे को पागल होने से बचाओ, और इसे ढोल सहित गांव से निकाल दो। इसी में तुम्हारा-हमारा व सारे गांव का भला है।
सुनकर रामनाथ का मुंह लटक गया।
तब श्यामनाथ ने मुखिया से कहा—
मुखिया जी! मैं चाहकर भी अब ढोल का साथ नहीं छोड़ सकता। साथ ही साथ मैं गांव का बुरा होते हुए भी नहीं देख सकता। इसलिए मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि ढोल को लेकर मैं आज ही गांव से कहीं दूर चला जाऊंगा।
हमें तुमसे ऐसी ही उम्मीद थी श्यामनाथ। तुम्हारा कथन सुनकर हमें खुशी हुई है।
पंचों को प्रणाम करके श्यामनाथ वहां से अपनी झोंपड़ी की ओर चल दिया। पीछे-पीछे मुंह लटकाए रामनाथ भी चल दिया।

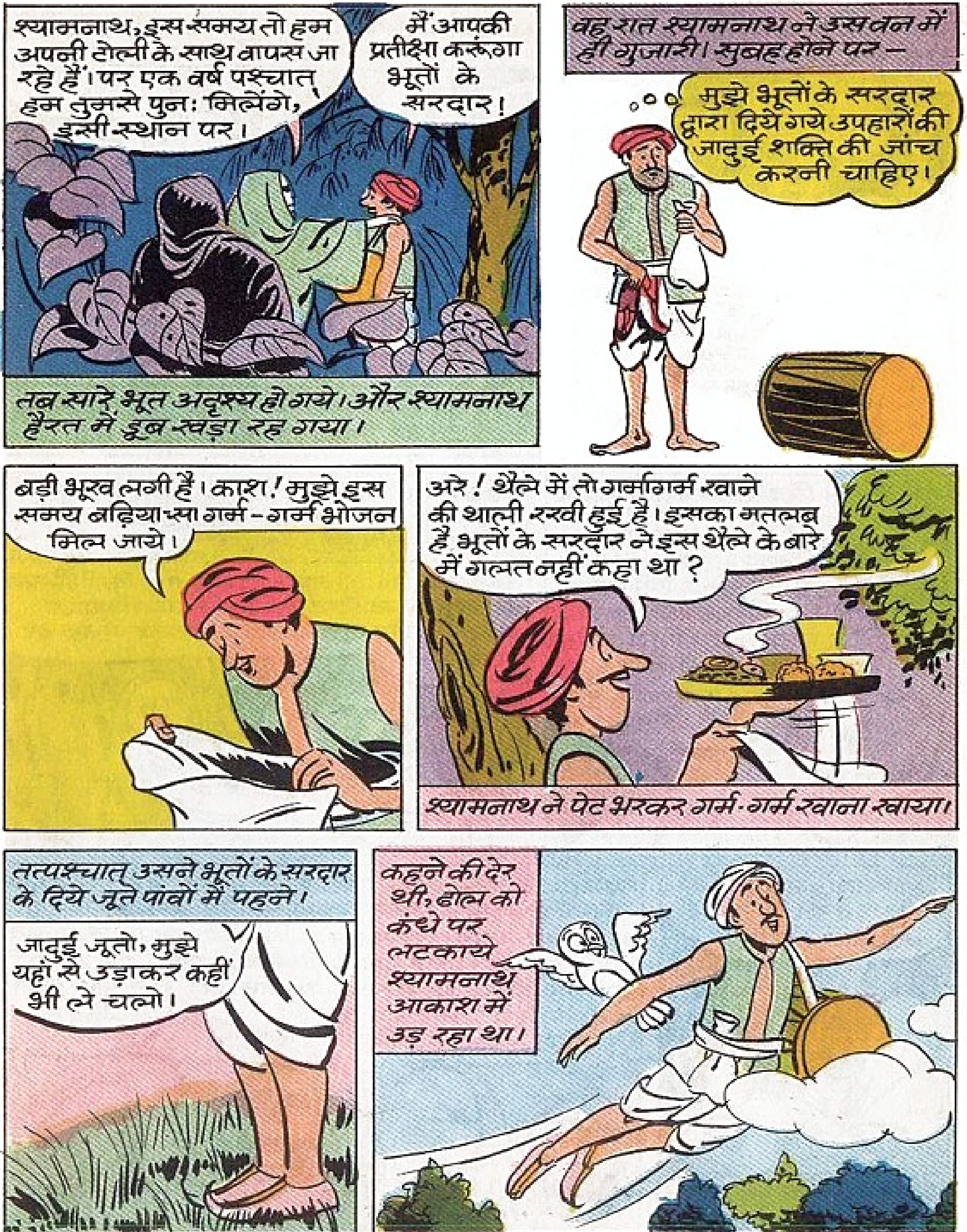

झोंपड़ी में पहुंचकर रामनाथ ने सारी बात कमला को बताई। सारी बात जानकर कमला ने श्यामनाथ से पूछा—
तो क्या तू सचमुच ही हमें छोड़कर चला जाएगा?
इसके सिवा और कोई चारा भी तो नहीं है मां। अगर मैं यहां रहा तो ढोल के कारण गांव में तबाही फैल जाएगी। लोग परेशान हो उठेंगे। इसलिए मेरा गांव छोड़कर चले जाना ही ठीक है।
ठीक है बेटा। जब तुमने गांव छोड़कर जाने का निश्चय कर ही लिया है, तो अब कुछ भी कहना-सुनना बेकार है। पर मेरी एक विनती मान ले बेटा।
क्या मां?
अपने बापू और मुझे भी अपने साथ ले चल।
यह तुम क्या कह रही हो मां?
मैं ठीक कह रही हूं बेटा। तेरे बिना क्या हम दोनों जीवित रह पायेंगे? हम दोनों भी तेरे साथ जायेंगे।
ऐसा कैसे हो सकता है मां? मेरा कोई ठौर-ठिकाना तो है नहीं, जहां मैं तुम्हें और बापू को ले जाऊं...
...और फिर यहां पर खेत व घर को कौन संभालेगा? मैं हमेशा के लिए गांव छोड़कर थोड़े ही जा रहा हूं। मैं वचन देता हूं कि इस मनहूस ढोल से पीछा छुड़ाकर मैं शीघ्र ही गांव वापस लौटूंगा।
बेटा! यह सब इस भुतहे ढोल के कारण हुआ है...
...न यह तुम्हारे गले पड़ता न तुम्हें आज गांव छोड़कर जाना पड़ता। यह मनहूस ढोल हमारे हंसते-खेलते छोटे से परिवार में दुःखों का पहाड़ लेकर आया है।
देखो कमला, मुझे अपशब्द न बको, वरना मैं इसी क्षण तुम्हें व तुम्हारे परिवार को नष्ट कर सकता हूं।


यह सुनते ही रामनाथ ढोल के सामने गिड़गिड़ा उठा—
नहीं-नहीं ढोल...ऐसा अनर्थ न करना। कमला तो नादान है। इसकी बातों पर ध्यान न दो।
तब अपने माता-पिता से आशीर्वाद ले श्यामनाथ ढोल को कंधे पर लटका वहां से चल दिया।
भगवान! हमारे बेटे की रक्षा करना।
श्यामनाथ चलता गया, चलता गया। चलते-चलते वह एक नदी के किनारे पहुंचा।
नाववाले! क्या मुझे पार ले चलोगे?
हां-हां, क्यों नहीं? आओ, नाव में बैठ जाओ।
श्यामनाथ नाव में चढ़ गया।
नाव नदी के दूसरे छोर की ओर चल दी।
जब नाव नदी के बीच में पहुंची तो नाववाला श्यामनाथ से बोला—
ढोलवाले भाई! तुम्हारे पास ढोल है। इसे बजाते क्यों नहीं? कुछ गा-बजाकर हमारा मनोरंजन क्यों नहीं करते?
आज मैंने ढोल को बजाया भी नहीं है। क्यों न नाव में ही दो घंटे के लिए ढोल बजा लूं।
यह सोच अगले ही पल श्यामनाथ ढोल बजाने लगा। जैसे ही ढोल पर पहली थाप पड़ी—
धरड़... धड़ांम..
अरे! ढोल की इतनी भयानक आवाज?
अगले ही पल—
धरड़... धड़ाम.
ओह! आश्चर्य! नदी के ठहरे पानी में अचानक ही ऊंची लहरें उठने लगी हैं?
इन लोगों को क्या पता यह सब भुतहा ढोल की करामात है?
पानी की ऊंची लहरों ने तुरन्त नाव को घेर लिया।


हे भगवान्, लगता है अब नाव उलटकर रहेगी?
दूसरे ही क्षण नाव बुरी तरह डगमगाने लगी।
आह!
बचाओ!
अरे!
एक-एक करके नाव में सवार लोग नदी में गिरने लगे। श्यामनाथ इस सबसे बेखबर होकर ढोल बजाये जा रहा था।
कुछ देर बाद नाववाले सहित सभी यात्री नदी के पानी में समा चुके थे। अब नाव में अकेला बैठा श्यामनाथ ढोल बजा रहा था।
धरड़... धड़म..
नाव ऊंची लहरों पर उछलती रही, पर श्यामनाथ निर्भय होकर ढोल बजाता रहा।
दो घंटे बाद जब उसने ढोल बजाना बंद किया तो पानी में उछलती लहरें अपने आप शांत हो गईं।
बेचारे यात्री और बेचारा नाववाला सारे के सारे ढोल की मनहूसियत का शिकार हो गए?
तब श्यामनाथ खुद ही नाव को खेता हुआ नदी के दूसरे तट पर पहुंचा।
दिन छिप गया है। लगता है आज की रात इस जंगल में ही गुजारनी पड़ेगी।
श्यामनाथ ढोल को उठाए जंगल में घुस गया।
कुछ देर बाद ही रात का अंधेरा छा गया।
अब जंगल में आगे बढ़ना खतरे से खाली नहीं है। आज की रात यहीं बितानी चाहिए।
श्यामनाथ एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगा।
जब उसे वहां बैठे काफी देर हो गई तो —
खाली बैठे-बैठे क्या करूं? इस प्रकार तो रात कटनी मुश्किल हो जाएगी। क्यों न ढोल ही बजाना शुरू कर दूं?
श्यामनाथ ने ढोल गले में लटकाया और आंख मूंदकर उसे बजाना शुरू कर दिया।
धरड़.. धड़ाम.. धरड़.. धड़ाम..
वह तन्मय होकर ढोल बजाता जा रहा था।

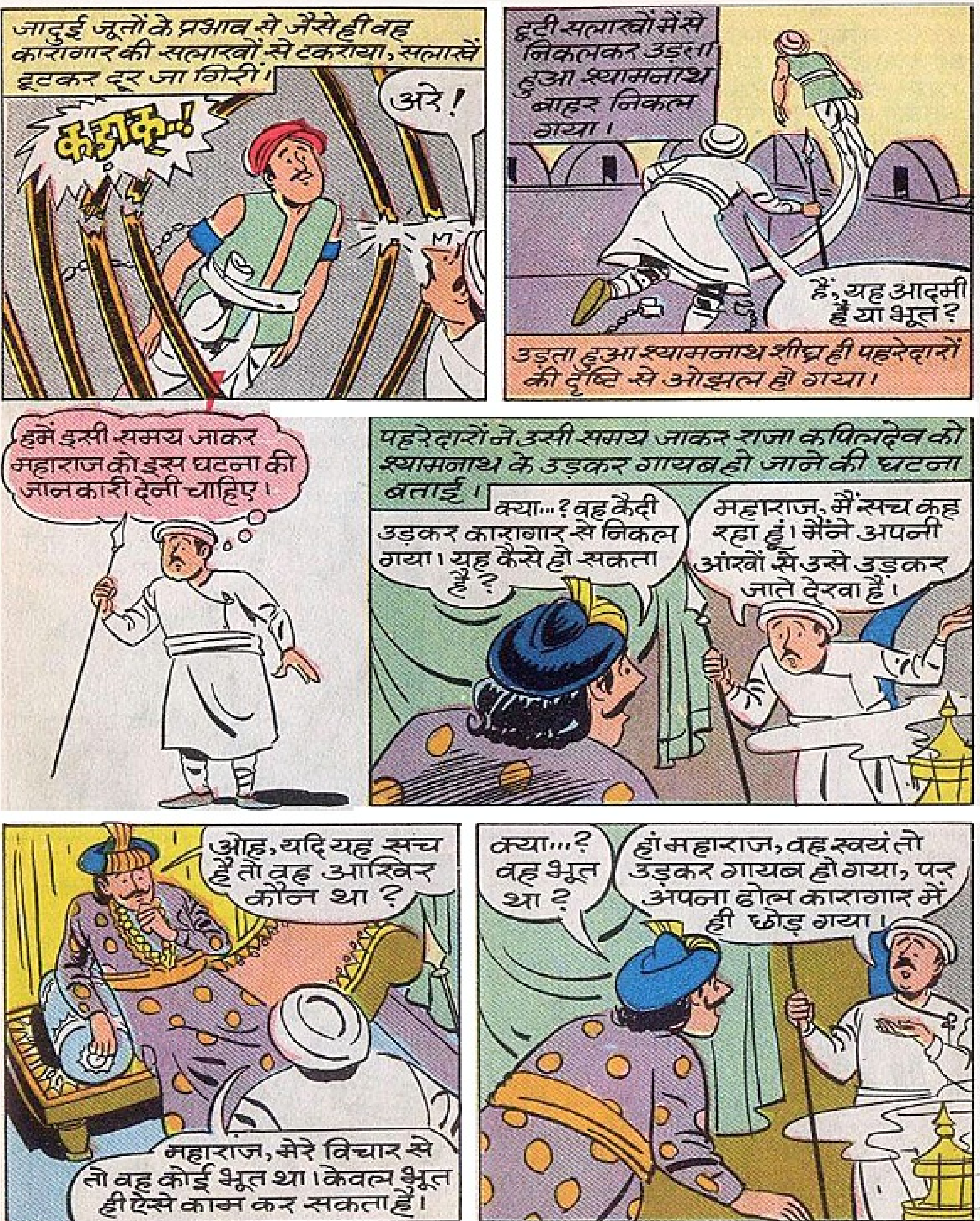


उसे पता ही न चला कि कब भूतों की एक टोली आकर ढोल की भयंकर ताल पर नृत्य करने लगी थी।
हा-हा-हा!
हो-हो-हो!
भूतों का अट्टहास सुनकर ढोल बजाते श्यामनाथ ने आंखें खोली।
भू..भू..भूत!
भूतों की टोली को सामने देख श्यामनाथ की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी।
उसे भय से सिटपिटाता देखकर एक भूत बोला—
डरो मत श्यामनाथ, दिवाकर भूत के ढोल की थाप सुनकर मेरी टोली से रहा न गया और हम सब यहां आकर नाचने लगे। मैं इस टोली का सरदार हूं। मैं तुमसे बहुत खुश हूं श्यामनाथ, तुम हमसे डरो नहीं।
कहकर भूतों की टोली के सरदार ने हवा में हाथ लहराया। अगले ही पल उसके हाथ में एक थैला और एक जोड़ी जूते आ गये।
श्यामनाथ, यह थैला और जूतों की जोड़ी जादुई हैं। थैले में से किसी भी समय इच्छानुसार स्वादिष्ट गर्म भोजन प्राप्त किया जा सकता है और जूते पहनकर आकाश में उड़ा जा सकता है...
...श्यामनाथ, इन उपहारों को स्वीकार करो। ये तुम्हारे बड़े काम आयेंगे।
श्यामनाथ ने हिचकते हुए भूत से दोनों वस्तुएं ले लीं।
श्यामनाथ, मैं जानता हूं कि तुम्हारे ढोल की आवाज मनुष्यों को बड़ी कर्कश और भयानक लगती है। अतः आज के बाद जब भी तुम इस ढोल को बजाओगे तभी इसमें से मधुर आवाज निकलेगी। साथ ही साथ इस ढोल की आवाज सुनने वाले जमीन से चिपक जायेंगे और चाहकर भी हिल-डुल नहीं सकेंगे।
भूतों के सरदार, आपने मुझे बहुत बहुमूल्य उपहार दिये हैं। मैं आपका बड़ा आभारी हूं।

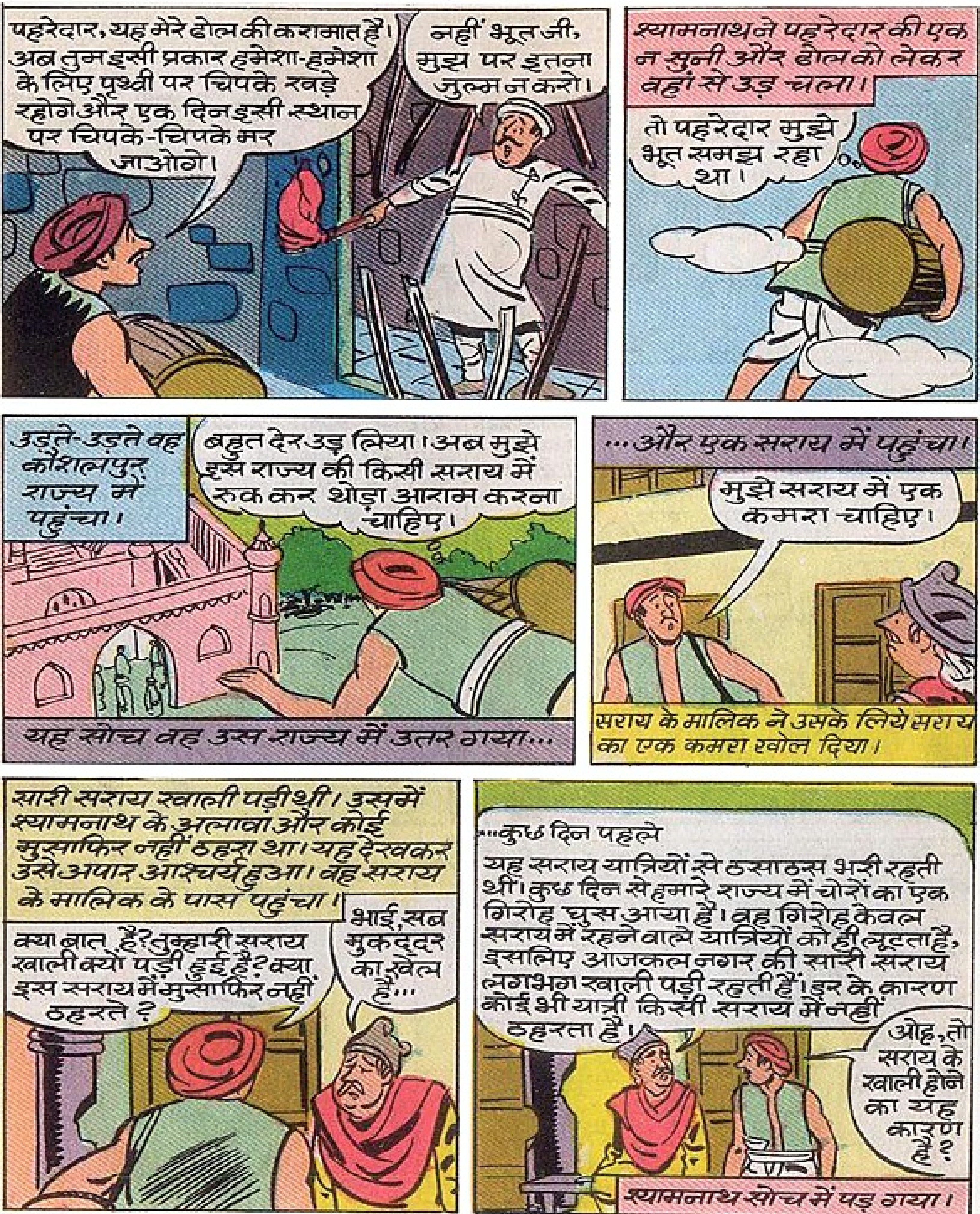

श्यामनाथ, इस समय तो हम अपनी टोली के साथ वापस जा रहे हैं। पर एक वर्ष पश्चात् हम तुमसे पुन: मिलेंगे, इसी स्थान पर।
मैं आपकी प्रतीक्षा करूंगा भूतों के सरदार!
तब सारे भूत अदृश्य हो गये। और श्यामनाथ हैरत में डूब खड़ा रह गया।
वह रात श्यामनाथ ने उस वन में ही गुजारी। सुबह होने पर —
मुझे भूतों के सरदार द्वारा दिये गये उपहारों की जादुई शक्ति की जांच करनी चाहिए।
बड़ी भूख लगी है। काश! मुझे इस समय बढ़िया सा गर्म-गर्म भोजन मिल जाये।
अरे! थैले में तो गर्मागर्म खाने की थाली रखी हुई है। इसका मतलब है भूतों के सरदार ने इस थैले के बारे में गलत नहीं कहा था?
श्यामनाथ ने पेट भरकर गर्म-गर्म खाना खाया।
तत्पश्चात् उसने भूतों के सरदार के दिये जूते पांवों में पहने।
जादुई जूतो, मुझे यहां से उड़ाकर कहीं भी ले चलो।
कहने की देर थी, ढोल को कंधे पर लटकाये श्यामनाथ आकाश में उड़ रहा था।


उड़ते-उड़ते वह दीनापुर के राज उद्यान के ऊपर से गुजरा।
वाह, कितना सुन्दर उद्यान है। मुझे इस उद्यान में उतरकर कुछ देर विश्राम कर लेना चाहिए।
यह सोच उसने तत्काल ही जादुई जूतों को आदेश दिया।
जादुई जूतो, मुझे इस उद्यान में उतार दो।
अगले ही पल—
कुछ देर बाद वह राज उद्यान में खड़ा था। उसने जादुई जूते पैरों में से निकालकर जेब में रख लिये।
वे दोनों कौन हैं। वेशभूषा से तो वे राजा-रानी प्रतीत हो रहे हैं।
वे दोनों सचमुच दीनापुर के राजा कपिलदेव व रानी सुजाता थे।
श्यामनाथ धीरे-धीरे चलता हुआ उनके सामने पहुंचा।
कौन हो तुम? तुम्हें राज उद्यान में किसने घुसने दिया?
श्यामनाथ को एकाएक यह नहीं सूझा कि वह कपिलदेव के प्रश्न का क्या जवाब दे।
तभी कपिलदेव जोर से चिल्लाया।
अरे कोई है? आकर जल्दी से इस दुस्साहसी को पकड़ो।
महाराज, मेरी बात तो सुनो, मैंने कोई अपराध नहीं किया है।


तत्काल ही सैनिकों ने आकर श्यामनाथ को घेर लिया।
सैनिको, इस धूर्त को ले जाकर कारागार में बन्द कर दो।
सैनिकों ने उसे ले जाकर कारागार में बन्द कर दिया।
हाय री किस्मत, तूने आज जेल की हवा भी खिला दी।
कुछ देर बाद जब उसे भूख लगी तो उसने जादुई थैले में से निकालकर गर्मागर्म खाना खाया।
तत्पश्चात्—
श्यामनाथ, इस तरह हाथ पर हाथ धरकर बैठने से काम नहीं चलेगा। जादुई जूते पहनकर शीघ्र ही इस कारागार से निकल जा। इसी में तेरी भलाई है।
श्यामनाथ ने जेब से निकालकर जादुई जूते पहने।
जादुई जूतो, मुझे इस कारागार से बाहर उड़ा ले चलो।
जल्दबाजी में उसे ढोल को साथ लेने का ख्याल बिल्कुल भी नहीं आया।
अगले ही पल वह उड़ चला।

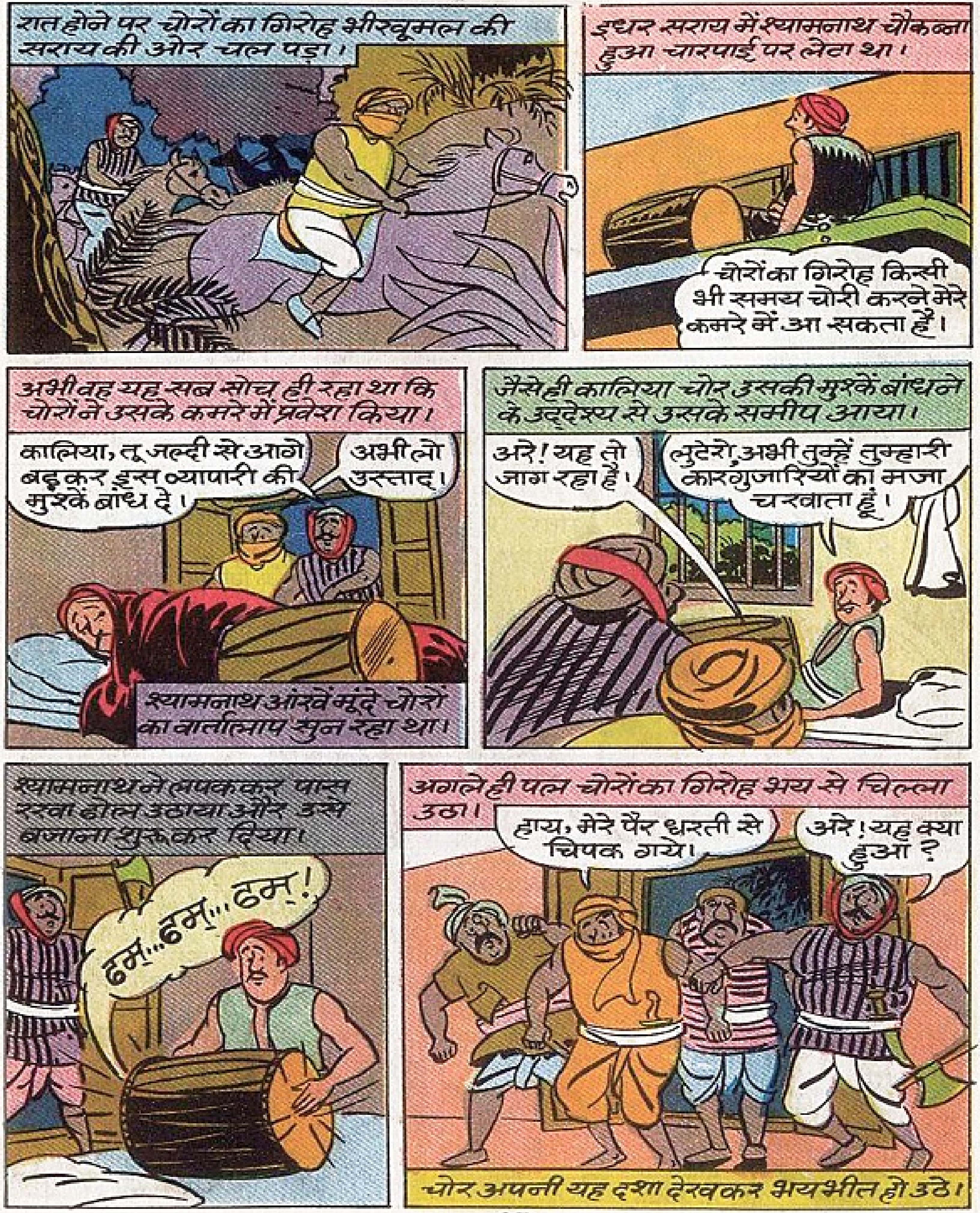

जादुई जूतों के प्रभाव से जैसे ही वह कारागार की सलाखों से टकराया, सलाखें टूटकर दूर जा गिरीं।
कड़ाक्!
अरे!
टूटी सलाखों में से निकलकर उड़ता हुआ श्यामनाथ बाहर निकल गया।
हैं, यह आदमी है या भूत?
उड़ता हुआ श्यामनाथ शीघ्र ही पहरेदारों की दृष्टि से ओझल हो गया।
हमें इसी समय जाकर महाराज को इस घटना की जानकारी देनी चाहिए।
पहरेदारों ने उसी समय जाकर राजा कपिलदेव को श्यामनाथ के उड़कर गायब हो जाने की घटना बताई।
क्या...? वह कैदी उड़कर कारागार से निकल गया। यह कैसे हो सकता है?
महाराज, मैं सच कह रहा हूं। मैंने अपनी आंखों से उसे उड़कर जाते देखा है।
ओह, यदि यह सच है तो वह आखिर कौन था?
महाराज, मेरे विचार से तो वह कोई भूत था। केवल भूत ही ऐसे काम कर सकता है।
क्या...? वह भूत था?
हां महाराज, वह स्वयं तो उड़कर गायब हो गया, पर अपना ढोल कारागार में ही छोड़ गया।


यह तो गजब हो गया। भूत का ढोल महल में रहना ठीक नहीं है। जाओ, जाकर उसे तुरन्त जला दो।
जो आज्ञा महाराज।
एक पहरेदार जलती मशाल लेकर ढोल को जलाने चल दिया।
इधर कुछ देर आकाश में उड़ने के पश्चात् सहसा श्यामनाथ को याद आया।
ओह, जल्दबाजी में मैं अपना ढोल तो वहीं छोड़ आया। यह तो बहुत बुरा हुआ, मुझे तुरन्त वापस जाकर अपना ढोल लाना चाहिए।
यह सोच वह उड़ता हुआ वापस महल की ओर चल दिया।
शीघ्र ही वह उड़ता हुआ कारागार के उस कक्ष में जा पहुंचा, जहां से सलाखें तोड़कर वह कुछ देर पहले भागा था।
भगवान् का शुक्र है कि ढोल सही सलामत रखा हुआ है।
तभी जलती हुई मशाल लेकर पहरेदार ने कक्ष में प्रवेश किया।
तुम...? तुम वापस आ गये?
श्यामनाथ ने आव न देखा ताव तुरन्त ढोल बजाना शुरू कर दिया।
ढम.. ढम.. ढम..!
अरे! यह क्या? ढोल बजते ही मेरे कदम पृथ्वी से क्यों चिपक गये?


पहरेदार, यह मेरे ढोल की करामात है। अब तुम इसी प्रकार हमेशा-हमेशा के लिए पृथ्वी पर चिपके खड़े रहोगे और एक दिन इसी स्थान पर चिपके-चिपके मर जाओगे।
नहीं भूत जी, मुझ पर इतना जुल्म न करो।
श्यामनाथ ने पहरेदार की एक न सुनी और ढोल को लेकर वहां से उड़ चला।
तो पहरेदार मुझे भूत समझ रहा था।
उड़ते-उड़ते वह कौशलपुर राज्य में पहुंचा।
बहुत देर उड़ लिया। अब मुझे इस राज्य की किसी सराय में रुक कर थोड़ा आराम करना चाहिए।
यह सोच वह उस राज्य में उतर गया...
...और एक सराय में पहुंचा।
मुझे सराय में एक कमरा चाहिए।
सराय के मालिक ने उसके लिये सराय का एक कमरा खोल दिया।
सारी सराय खाली पड़ी थी। उसमें श्यामनाथ के अलावा और कोई मुसाफिर नहीं ठहरा था। यह देखकर उसे अपार आश्चर्य हुआ। वह सराय के मालिक के पास पहुंचा।
क्या बात है? तुम्हारी सराय खाली क्यों पड़ी हुई है? क्या इस सराय में मुसाफिर नहीं ठहरते?
भाई, सब मुकद्दर का खेल है...
...कुछ दिन पहले यह सराय यात्रियों से ठसाठस भरी रहती थी। कुछ दिन से हमारे राज्य में चोरों का एक गिरोह घुस आया है। वह गिरोह केवल सराय में रहने वाले यात्रियों को ही लूटता है, इसलिए आजकल नगर की सारी सराय लगभग खाली पड़ी रहती हैं। डर के कारण कोई भी यात्री किसी सराय में नहीं ठहरता है।
ओह, तो सराय के खाली होने का यह कारण है?
श्यामनाथ सोच में पड़ गया।



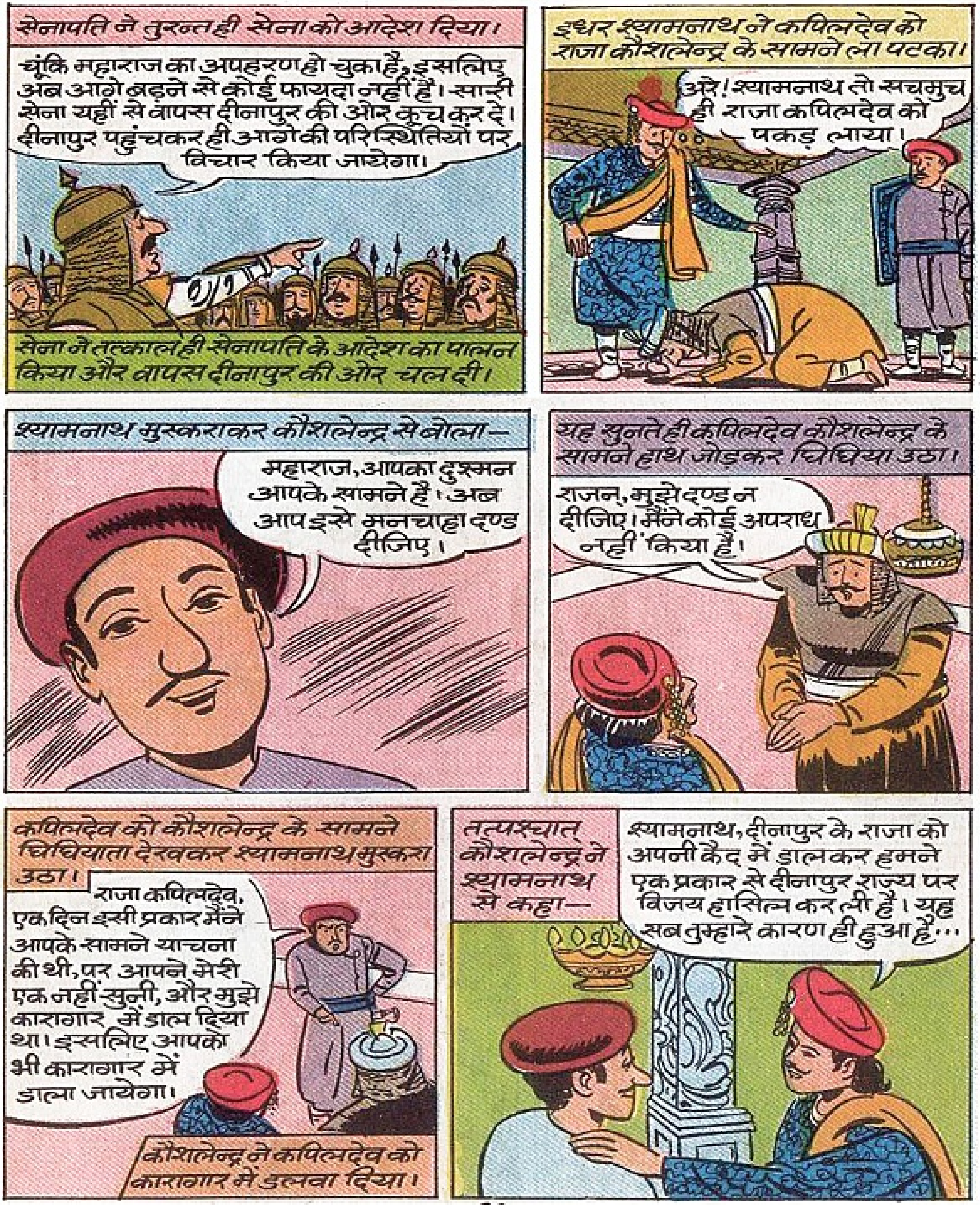
कुछ सोचकर उसने सराय के मालिक से कहा-
मैं उस चोरों के गिरोह को बड़ी आसानी से पकड़ सकता हूं।
क्या सच?
हां!
तो जल्दी बताओ, इसके लिये मुझे क्या करना होगा?
तुम नगर में ढिंढोरा पिटवा दो कि हीरे-जवाहरात का एक व्यापारी तुम्हारी सराय में आकर ठहरा है। नगर का जो कोई भी जौहरी उस व्यापारी से हीरे-जवाहरात खरीदना चाहता है, वह सराय में आकर उस व्यापारी से मिल ले।
मैं इसी समय नगर में यह ढिंढोरा पिटवा देता हूं।
कुछ देर बाद ही ढिंढोरे वाला नगर में यह ढिंढोरा कर रहा था।
सुनो भाइयो, सुनो, भीखूमल की सराय में श्यामनाथ नाम का हीरे-जवाहरात का एक व्यापारी आकर ठहरा हुआ है। जो भी उससे हीरे जवाहरात खरीदना चाहता है, भीखूमल की सराय में जाकर उससे कभी भी मिल सकता है।
चोरों के गिरोह ने भी यह मुनादी सुनी थी। जब वे एक साथ इकट्ठे हुए।
कालिया, तूने मुनादी सुनी?
हां उस्ताद! लगता है श्यामनाथ व्यापारी की शामत आयी है, जो उसने यह मुनादी करवाई है।
कालिया आज की रात हम श्यामनाथ को लूटने चलेंगे।


रात होने पर चोरों का गिरोह भीखूमल की सराय की ओर चल पड़ा।
इधर सराय में श्यामनाथ चौकन्ना हुआ चारपाई पर लेटा था।
चोरों का गिरोह किसी भी समय चोरी करने मेरे कमरे में आ सकता है।
अभी वह यह सब सोच ही रहा था कि चोरों ने उसके कमरे में प्रवेश किया।
कालिया, तू जल्दी से आगे बढ़ कर इस व्यापारी की मुश्कें बांध दे।
अभी लो उस्ताद।
श्यामनाथ आंखें मूंदे चोरों का वार्तालाप सुन रहा था।
जैसे ही कालिया चोर उसकी मुश्कें बांधने के उद्देश्य से उसके समीप आया।
अरे! यह तो जाग रहा है।
लुटेरो, अभी तुम्हें तुम्हारी कारगुजारियों का मजा चखवाता हूं।
श्यामनाथ ने लपककर पास रखा ढोल उठाया और उसे बजाना शुरू कर दिया।
ढम्...ढम्...ढम्!
अगले ही पल चोरों का गिरोह भय से चिल्ला उठा।
हाय, मेरे पैर धरती से चिपक गये।
अरे! यह क्या हुआ?
चोर अपनी यह दशा देखकर भयभीत हो उठे।

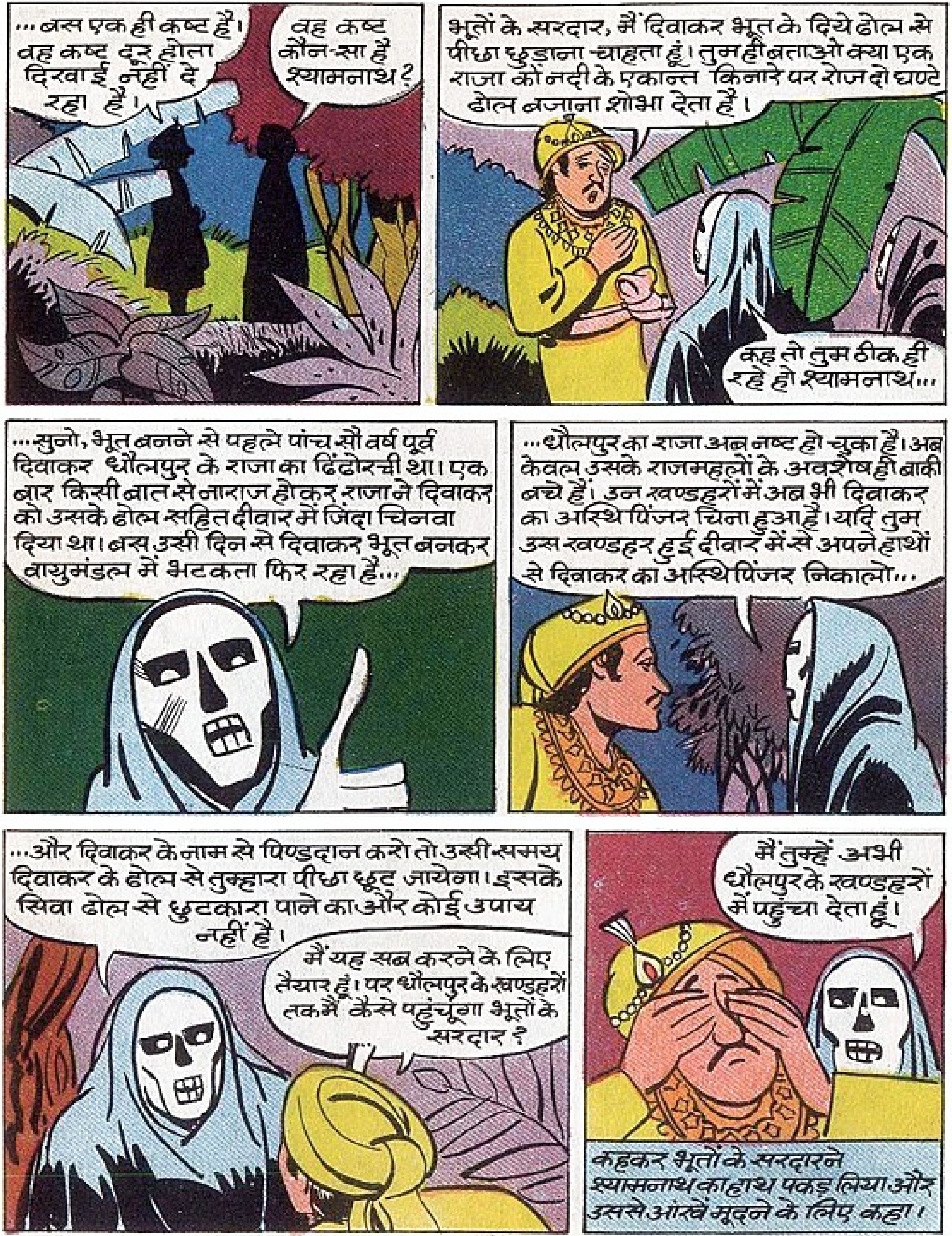

श्यामनाथ चोरों को वहीं चिपका छोड़कर सराय के मालिक के पास पहुंचा और उसे जगाकर बोला—
चोरों के गिरोह को मैंने पकड़ लिया है।
कहां हैं वे?
श्यामनाथ सराय वाले को अपने कमरे में लेकर पहुंचा।
तो तुम्हीं ने नगर में आतंक मचाकर सराय वालों की रोजी-रोटी छीन रखी थी।
अगले दिन सुबह सराय वाले ने कौशलपुर के राजा कौशलेन्द्र के पास चोरों के गिरोह के पकड़े जाने की खबर भिजवा दी।
कौन है वह बहादुर, जिसने चोरों के गिरोह को पकड़ा है। उसे शीघ्र ही हमारे सामने पेश किया जाये।
जो हुक्म महाराज!
कौशलेन्द्र के आदेश पर श्यामनाथ सैनिक के साथ राजमहल पहुंचा।
तुम ही वह नौजवान हो जिसने चोरों के गिरोह को पकड़ा है।
जी महाराज!
नौजवान, चोरों के उस गिरोह ने हमारे राज्य में बहुत दिनों से उत्पात मचाया हुआ था। उस गिरोह को पकड़कर तुमने बहुत बहादुरी का काम किया है। हम तुमसे बहुत खुश हैं। मांगो बदले में तुम्हें क्या चाहिए?
महाराज, मुझे बदले में हीरे, माणिक, मोती कुछ नहीं चाहिए...
...मैं बेरोजगार हूं। अगर आप अपने यहां मुझे नौकरी दे दें तो आपका मुझ पर बहुत उपकार होगा।
तुम जैसे बहादुर आदमी को तो सेना में होना चाहिए। हम तुम्हें अपनी सेना में सैनिक की नौकरी देते हैं।

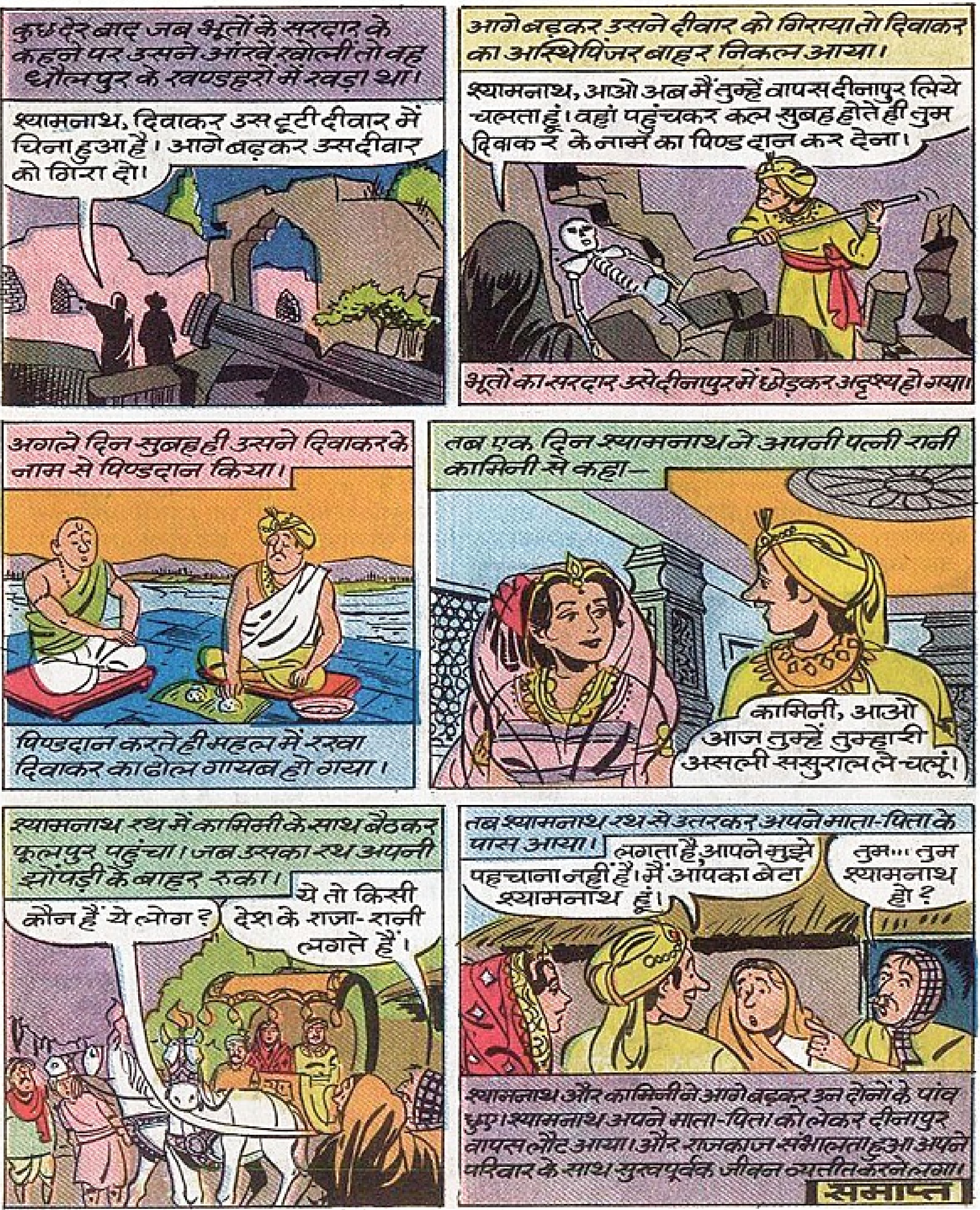

श्यामनाथ उसी दिन से राजा कौशलेन्द्र की सेना में भर्ती हो गया।
कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि किसान का बेटा होकर सेना में भर्ती होना पड़ेगा।
दिनभर वह सैनिक गतिविधियों में व्यस्त रहता और रात्रि को एकान्त में नदी के किनारे जाकर प्रति दिन दो घण्टे ढोल को बजाया करता था। ढोल से अब बेसुरी धुन के स्थान पर सुरीली धुन निकलती थी।
एक दिन एक गुप्तचर राजा कौशलेन्द्र के पास एक सूचना लेकर आया।
महाराज, बड़ी बुरी खबर है। दीनापुर के राजा कपिलदेव अपनी विशाल सेना के साथ कौशलपुर पर धावा बोलने वाले हैं। वे कौशलपुर के समीप पहुंच चुके हैं।
क्या ? कपिलदेव के पास तो बहुत विशाल व शक्तिशाली सेना है...
...उसकी विशाल सेना से हमारी छोटी सेना कैसे मुकाबला कर पायेगी। ओह! लगता है अब कौशलपुर हमसे छिन जायेगा।
श्यामनाथ को यह सूचना मिली तो वह दौड़ा-दौड़ा कौशलेन्द्र के पास आया।
महाराज, परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप कहें तो मैं राजा कपिलदेव को आपके चरणों में लाकर डाल दूं।
क्या ऐसा हो सकता है ?
क्यों नहीं महाराज, मैं बड़ी आसानी से यह सब कर सकता हूं।
तो जाओ, इस असम्भव कार्य को करके दिखलाओ तो जानें।
श्यामनाथ ने तत्काल ही जेब से निकालकर जादुई जूते पहने।
जादुई जूतो, मुझे राजा कपिलदेव के पास ले चलो।
???


अगले ही पल-
अरे! श्यामनाथ तो पक्षियों की तरह उड़ने लगा।
शीघ्र ही उड़ता हुआ श्यामनाथ कौशलेन्द्र की दृष्टि से ओझल हो गया।
इधर राजा कपिलदेव मस्त झूमता हुआ अपनी सेना के साथ कौशलपुर की ओर बढ़ा चला आ रहा था।
तभी उड़ता हुआ श्यामनाथ वहां पहुंचा।
वह रहा कपिलदेव। मुझे उड़कर उधर ही पहुंचना चाहिए।
वह उड़ता हुआ हाथी पर बैठे कपिलदेव के ऊपर पहुंचा और उसने झपटकर कपिलदेव का हाथ पकड़ लिया।
अरे..रे..भूत... तुम... तुम कहां से आ गये? छोड़ो मेरा हाथ... छोड़ दो।
कपिलदेव, मैंने तुम्हारा हाथ छोड़ने के लिए नहीं पकड़ा है।
श्यामनाथ कपिलदेव को पकड़कर वहां से उड़ चला।
बचाओ... बचाओ... कोई मुझे इस भूत से बचाओ।
हा-हा-हा-!
अरे! कोई महाराज को उड़ाकर ले जा रहा है।
श्यामनाथ शीघ्र ही कपिलदेव के साथ सेना की दृष्टि से ओझल हो गया।
अपने राजा को इस प्रकार गायब होता देख सेना में खलबली सी मच गई।
लगता है, महाराज को कोई जिन्न उठाकर ले गया है।
महाराज के बिना हम कौशलपुर पर कैसे धावा बोल सकते हैं।
पता नहीं वह जिन्न महाराज की क्या दुर्दशा करे।


सेनापति ने तुरन्त ही सेना को आदेश दिया।
चूंकि महाराज का अपहरण हो चुका है, इसलिए अब आगे बढ़ने से कोई फायदा नहीं है। सारी सेना यहीं से वापस दीनापुर की ओर कूच कर दे। दीनापुर पहुंचकर ही आगे की परिस्थितियों पर विचार किया जायेगा।
सेना ने तत्काल ही सेनापति के आदेश का पालन किया और वापस दीनापुर की ओर चल दी।
इधर श्यामनाथ ने कपिलदेव को राजा कौशलेन्द्र के सामने ला पटका।
अरे! श्यामनाथ तो सचमुच ही राजा कपिलदेव को पकड़ लाया।
श्यामनाथ मुस्कराकर कौशलेन्द्र से बोला—
महाराज, आपका दुश्मन आपके सामने है। अब आप इसे मनचाहा दण्ड दीजिए।
यह सुनते ही कपिलदेव कौशलेन्द्र के सामने हाथ जोड़कर घिघिया उठा।
राजन्, मुझे दण्ड न दीजिए। मैंने कोई अपराध नहीं किया है।
कपिलदेव को कौशलेन्द्र के सामने घिघियाता देखकर श्यामनाथ मुस्करा उठा।
राजा कपिलदेव, एक दिन इसी प्रकार मैंने आपके सामने याचना की थी, पर आपने मेरी एक नहीं सुनी, और मुझे कारागार में डाल दिया था। इसलिए आपको भी कारागार में डाला जायेगा।
कौशलेन्द्र ने कपिलदेव को कारागार में डलवा दिया।
तत्पश्चात कौशलेन्द्र ने श्यामनाथ से कहा—
श्यामनाथ, दीनापुर के राजा को अपनी कैद में डालकर हमने एक प्रकार से दीनापुर राज्य पर विजय हासिल कर ली है। यह सब तुम्हारे कारण ही हुआ है...


...हम तुमसे बहुत खुश हैं। दीनापुर का राज सिंहासन इस समय खाली है। हम तुम्हें दीनापुर का नया राजा बनाते हैं। और साथ ही साथ अपनी पुत्री कामिनी का विवाह तुम्हारे साथ करना चाहते हैं।
महाराज, जैसा आप उचित समझें, करें।
अगले ही दिन श्यामनाथ व राजकुमारी कामिनी का विवाह धूमधाम से हो गया।
वाह श्यामनाथ, तेरे तो खूब दिन फिरे।
राजा कौशलेन्द्र ने दीनापुर जाकर श्यामनाथ को दीनापुर का नया राजा घोषित कर दिया।
दीनापुर के प्रजाजनो, आज से राजा श्यामनाथ तुम्हारे नये राजा हैं।
श्यामनाथ दीनापुर पर राज करने लगा।
अब वह प्रतिदिन रात्रि में बंद कक्ष में दो घण्टे ढोल बजाता था।
धीरे-धीरे पूरा एक वर्ष बीत गया।
एक वर्ष बीत गया। हमें आज की रात भूतों के सरदार से मिलने जंगल में जाना है।
रात्रि को जब वह जंगल में पहुंचा तो भूतों की टोली से उसकी मुलाकात हुई।
ढम...ढम...ढम...
कहो श्यामनाथ कैसे हो?
भूतों के सरदार, तुम्हारे दिये उपहारों के कारण ही आज मैं दीनापुर का राजा हूं। बड़े सुख से मेरे दिन कट रहे हैं...


...बस एक ही कष्ट है। वह कष्ट दूर होता दिखाई नहीं दे रहा है।
वह कष्ट कौन-सा है श्यामनाथ?
भूतों के सरदार, मैं दिवाकर भूत के दिये ढोल से पीछा छुड़ाना चाहता हूं। तुम ही बताओ क्या एक राजा को नदी के एकान्त किनारे पर रोज दो घण्टे ढोल बजाना शोभा देता है।
कह तो तुम ठीक ही रहे हो श्यामनाथ...
...सुनो, भूत बनने से पहले पांच सौ वर्ष पूर्व दिवाकर धौलपुर के राजा का ढिंढोरची था। एक बार किसी बात से नाराज होकर राजा ने दिवाकर को उसके ढोल सहित दीवार में जिंदा चिनवा दिया था। बस उसी दिन से दिवाकर भूत बनकर वायुमंडल में भटकता फिर रहा है...
...धौलपुर का राजा अब नष्ट हो चुका है। अब केवल उसके राजमहलों के अवशेष ही बाकी बचे हैं। उन खण्डहरों में अब भी दिवाकर का अस्थि पिंजर चिना हुआ है। यदि तुम उस खण्डहर हुई दीवार में से अपने हाथों से दिवाकर का अस्थि पिंजर निकालो...
...और दिवाकर के नाम से पिण्डदान करो तो उसी समय दिवाकर के ढोल से तुम्हारा पीछा छूट जायेगा। इसके सिवा ढोल से छुटकारा पाने का और कोई उपाय नहीं है।
मैं यह सब करने के लिए तैयार हूं। पर धौलपुर के खण्डहरों तक मैं कैसे पहुंचूंगा भूतों के सरदार?
मैं तुम्हें अभी धौलपुर के खण्डहरों में पहुंचा देता हूं।
कहकर भूतों के सरदारने श्यामनाथ का हाथ पकड़ लिया और उससे आंखे मूदने के लिए कहा।


कुछ देर बाद जब भूतों के सरदार के कहने पर उसने आंखें खोलीं तो वह धौलपुर के खण्डहरों में खड़ा था।
श्यामनाथ, दिवाकर उस टूटी दीवार में चिना हुआ है। आगे बढ़कर उस दीवार को गिरा दो।
आगे बढ़कर उसने दीवार को गिराया तो दिवाकर का अस्थिपिंजर बाहर निकल आया।
श्यामनाथ, आओ अब मैं तुम्हें वापस दीनापुर लिये चलता हूं। वहां पहुंचकर कल सुबह होते ही तुम दिवाकर के नाम का पिण्ड दान कर देना।
भूतों का सरदार उसे दीनापुर में छोड़कर अदृश्य हो गया।
अगले दिन सुबह ही उसने दिवाकर के नाम से पिण्डदान किया।
पिण्डदान करते ही महल में रखा दिवाकर का ढोल गायब हो गया।
तब एक दिन श्यामनाथ ने अपनी पत्नी रानी कामिनी से कहा—
कामिनी, आओ आज तुम्हें तुम्हारी असली ससुराल ले चलूं।
श्यामनाथ रथ में कामिनी के साथ बैठकर फूलपुर पहुंचा। जब उसका रथ अपनी झोंपड़ी के बाहर रुका।
कौन हैं ये लोग?
ये तो किसी देश के राजा-रानी लगते हैं।
तब श्यामनाथ रथ से उतरकर अपने माता-पिता के पास आया।
लगता है, आपने मुझे पहचाना नहीं है। मैं आपका बेटा श्यामनाथ हूं।
तुम... तुम श्यामनाथ हो?
श्यामनाथ और कामिनी ने आगे बढ़कर उन दोनों के पांव छुए। श्यामनाथ अपने माता-पिता को लेकर दीनापुर वापस लौट आया। और राजकाज संभालता हुआ अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा।
समाप्त